परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण केलवा में

करणीय का बोध देता है श्रावक सम्बोध

१७ जुलाई। परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जैन साधना पद्धति में दो शब्द प्राप्त होते हैं--संवर और निर्जरा। ये दोनों मोक्ष प्राप्ति के साधन हैं। कर्मों के आगमन के द्वार को रोकना संवर कहलाता है और पूर्वार्जित कर्मों को नष्ट करना निर्जरा कहलाता है। संवर बहुत बड़ी साधना होती है। यह मोक्ष मार्ग का महान उपाय है। जैन दर्शन में निर्जरा के बारह प्रकार बताए गए हैं। अनाहार की साधना भी उसका एक प्रकार है। यथाशक्ति अनाहार की साधना करना अच्छा है। किन्तु वह न हो सके तो ध्यान, स्वाध्याय, विनय आदि तपस्या के अन्य ग्यारह भेदों की साधना के द्वारा आत्मविशुद्धि का प्रयास करें।'

'श्रावक सम्बोध' सीखने की प्रेरणा प्रदान करते हुए आचार्यवर ने कहा--'श्रावक सम्बोध परमपूज्य गुरुदेव तुलसी का महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। श्रावक-श्राविकाएं इस वर्ष उसे कण्ठस्थ करने का प्रयत्न करें। किसी के लिए अगर यह संभव न हो तो वे उसे पढ़कर समझने का प्रयत्न करें। उसके पठन से श्रावक को करणीय का अवबोध हो सकता है। बहिर्विहारी साधु-साध्वियां भी श्रावक-श्राविकाओं को श्रावक सम्बोध कंठस्थ कराने का प्रयास करें। कण्ठस्थ और पठन के साथ उसका अर्थबोध भी हो सके तो अधिक लाभ प्राप्त हो सकेगा।' आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ।

मध्याह्न में तेयुप केलवा द्वारा मंत्र दीक्षा का उपक्रम रहा। इस अवसर पर संभागी बालक-बालिकाओं को परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मंत्र दीक्षा प्रदान करते हुए पावन प्रेरणा-पाथेय प्रदान किया।

तभी मिलेगा मोक्ष

१८ जुलाई। प्रातःकालीन कार्यक्रम में परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आस्तिक दर्शनों में आत्मा के अस्तित्व को स्वीकारने के साथ-साथ मोक्ष अथवा निर्वाण को भी स्वीकारा गया है। सम्बोधि के तीसरे अध्याय में उल्लिखित है कि जो धर्म में स्थित है, स्थिरचित्त है और राग-द्वेष से मुक्त निर्मल ध्यान करने वाला है, वह निर्वाण प्राप्ति का अधिकारी बन सकता है। वर्तमान में यहां (भरत क्षेत्र) से मोक्ष को प्राप्त नहीं किया जा सकता। किन्तु साधना के द्वारा उसे निकट तो किया ही जा सकता है। साधना करते-करते एक दिन ऐसा आएगा कि साधक निर्वाण को प्राप्त कर लेगा।'

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरणादायक वक्तव्य हुआ। मुनि विजयकुमारजी, मुनि प्रसन्नकुमारजी एवं मुनि जितेन्द्रकुमारजी ने अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमारजी ने किया। रात्रि में स्थानीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा समायोजित जैनविद्या कार्यशाला का प्रारंभ हुआ। कार्यशाला की विस्तृत रिपोर्ट पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में।

स्वर्गतुल्य है वह परिवार

१९ जुलाई। आज प्रातः स्वामीनारायण सम्प्रदाय के श्री त्यागस्वामी पूज्यवर की सन्निधि में उपस्थित हुए और वार्तालाप किया। प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व मंत्रीमुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'संसार में स्वर्ग को सुख और शान्ति का प्रतीक माना जाता है। यदि परिवार का वातावरण सुखद हो तो वह भी स्वर्गतुल्य बन सकता है। जिस परिवार में संप (परस्पर सौहार्द) संपत्ति और सुसंस्कार होते हैं, वह परिवार स्वर्ग है। परिवारों में परस्पर सौहार्द, प्रेम और मैत्री का भाव रहे, यह पारिवारिक स्वस्थता का प्रथम आयाम है। स्वार्थ भाव से मुक्त परार्थ और उदारता का भाव हो तो विवाद को उत्पन्न होने का अवसर ही नहीं मिलता। पारिवारिक स्वस्थता का दूसरा आयाम है--संपत्ति। गृहस्थ को अर्थ की भी आवश्यकता होती है। उसके बिना प्राथमिक आवश्यकताओं की संपूर्ति कैसे होगी ? अर्थ के उपार्जन में प्रामाणिकता उसका आध्यात्मिक पक्ष है। प्राथमिक आवश्यकताओं की संपूर्ति पारिवारिक

स्वस्थता का दूसरा आयाम है। स्वर्गतुल्य परिवार का तीसरा और महत्त्वपूर्ण आयाम है--सुसंस्कार। उसके बिना परिवार का वातावरण नरकतुल्य बन जाता है। इस प्रकार बाह्य अनुकूलता के साथ धार्मिक साधना चलती रहे तो गृहस्थ का जीवन स्वर्ग के समान सुखद और शान्तिपूर्ण बन सकता है।'

श्रेष्ठ है परम गति

२० जुलाई। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनि का अभिभाषण हुआ। बोरज कन्या मंडल ने गीत प्रस्तुत किया। श्री चांदमलजी मेहर ने सात की तपस्या का प्रत्याख्यान करते हुए कविता प्रस्तुत की।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने सम्बोधि पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देव--इन चार गतियों से भी श्रेष्ठ पांचवीं गति है--परम गति। परम की प्राप्ति के बाद किसी भी प्रकार की कामना शेष नहीं रहती। परम की प्राप्ति के लिए आवश्यक है व्यक्ति का जीवन धर्म से अनुप्राणित हो। स्वाद विजय के साथ जो अल्पाहारी है, इन्द्रियों पर नियंत्रण रखता है, अल्पभाषी है, अप्रमादी है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं।' देवों की पहचान एवं उनके धरती पर आगमन के कारणों की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा 'मुमुक्षु एवं तपस्वी के दर्शन करने, अपने मित्रों को प्रतिबोध देने तथा अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए देवता साक्षात् उपस्थित हो सकते हैं। सामान्यतः देवता प्रत्यक्ष कम आते हैं, वे परोक्ष रूप में ही अपने अस्तित्व का भान कराते हैं।'

तेरापंथ महिला मंडल लाडनूं द्वारा गुरु चरणों में पहुंची चित्त समाधि यात्रा का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत ४० बहनों ने सात दिन तक गुरु उपासना का लाभ लिया और आज पूज्यवर से मंगलपाठ सुनकर केलवा से पुनः लाडनूं की ओर प्रस्थान किया।

बनें श्रावक कार्यकर्ता

२१ जुलाई। आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में श्री राजेन्द्र करणपुरिया ने गीत प्रस्तुत किया। बेंगलुरु महिला मंडल ने अपने रजतजयंती वर्ष में प्रकाशित स्मारिका 'सिन्दूरी सूरज' पूज्यवर को भेंट की। पाली कांग्रेस जिला प्रमुख श्री खुशवीरसिंह ने पाली जिले के विद्यालयों में प्रारंभ किए जा रहे जीवनविज्ञान पाठ्यक्रम और इसके प्रायोगिक प्रशिक्षण की जानकारी दी। मुनि किशनलालजी ने भी जीवनविज्ञान के संदर्भ में अपने विचार रखे।

मारवाड़जंक्शन के विधायक श्री केसाराम चौधरी ने अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त करते हुए कहा 'आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व और उनके मिशन से प्रभावित होकर मैं तेरापंथ के साथ जुड़ा। इसके बाद से ही मेरे जीवन में परिवर्तन आया। आज मैं इस धर्मसंघ के नियमों की पालना कर रहा हूं।'

अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलालजी ने केलवा में चल रहे नशामुक्ति अभियान के संदर्भ में विशद अवगति दी। उल्लेखनीय है--केलवा के ऐतिहासिक पावन प्रवेश के अवसर पर आचार्यवर ने केलवा नगर को नशामुक्त बनाने का आह्वान किया था। इसके लिए विशेष रूप से नियोजित मुनि सुखलालजी एवं मुनि जयंतकुमारजी के निर्देशन में तेयुप एवं किशोर मंडल के कार्यकर्ताओं ने नशामुक्ति का सघन अभियान चलाया। आज के कार्यक्रम में स्थानीय तेयुप अध्यक्ष विकास कोठारी, मंत्री लकी कोठारी, किशोर मंडल के संयोजक सुमित सांखला एवं सहसंयोजक निलेश कोठारी ने नशामुक्ति के ३६२ संकल्प पत्र पूज्य चरणों में उपहृत किए।

आज से जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा आयोजित उपासक प्रशिक्षण शिविर प्रारंभ हुआ। उपासकों द्वारा प्रस्तुत गीत के पश्चात महासभा के उपाध्यक्ष श्री ख्यालीलालजी तातेड़, उपासक श्रेणी के संयोजक श्री डालमचन्द नौलखा के प्रासंगिक वक्तव्य हुए। आचार्यवर ने प्रशिक्षणार्थी उपासकों को उपसंपदा प्रदान की।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा--'जहां निर्मलता का भाव होता है, वहां ईमानदारी के भाव स्वयं प्रस्फुटित होने लग जाते हैं। व्यक्ति के जीवन में अहिंसा, निर्मलता और पवित्रता का विकास बहुत आवश्यक है। भावों की विशुद्धता से सुसंस्कार अपने आप फलित होते हैं। इससे स्वयं व्यक्ति का तथा समाज, देश और धर्म का विकास होगा। जिस व्यक्ति के जीवन में संयम की चेतना का जागरण होने लगता है, उसके जीवन का रूपान्तरण होना शुरू हो जाता है। संवृत आत्मा संसार-समुद्र को पार कर समस्त दुःखों

www.terapanthinfo.com

से मुक्त हो जाती है। संवृत आत्मा जो स्वप्न देखती है, वह यथार्थ में परिणत होता है। वैसे तो स्वप्न काल्पनिक भी होते हैं, किन्तु शुद्धात्मा के स्वप्न साकार भी हो सकते हैं।'

प्रशिक्षणार्थी उपासकों को संबोधित करते हुए आचार्यवर ने कहा--'यह शिविर ज्ञानाराधना और चारित्राराधना का है। उपासक श्रावक कार्यकर्ता बनें। कार्यकर्ता की तीन श्रेणियां हैं--प्रथम कोटि के कार्यकर्ताओं में नाम की नहीं, काम करने की अभिलाषा होती है। द्वितीय श्रेणी के कार्यकर्ता काम के साथ नाम की भी अभिलाषा रखते हैं और तीसरी श्रेणी के कार्यकर्ता काम करने की नहीं, केवल नाम की अभिलाषा रखते हैं। तीनों श्रेणियों के कार्यकर्ता क्रमशः उत्तम, मध्यम और अधम कोटि के कहलाते हैं। उपासकों को प्रथम श्रेणी का कार्यकर्ता बनना है। उनमें ज्ञान के साथ निर्मलता का विकास भी अपेक्षित है।'

अपराह्न में आचार्यवर की सन्निधि में आयोजित कार्यक्रम में स्थानीय महिला मंडल की नई कार्यकारिणी के सदस्यों का परिचय दिया गया। अध्यक्ष श्रीमती फूलीदेवी कोठारी एवं मंत्री श्रीमती रत्ना कोठारी ने पांच संकल्प स्वीकार करने वाली बहनों की सूची प्रस्तुत की। आचार्यवर ने अपने संबोधन में कहा--'महिलाएं स्वयं के साथ अपने परिवार को भी धर्मोन्मुख बनाएं। बच्चों को संस्कार देने की उनकी विशेष जिम्मेदारी है।' राजसमन्द नगरपालिका की अध्यक्ष श्रीमती आशा पालीवाल ने आज पूज्यप्रवर के दर्शन किए।

नियंत्रित करें कामना को

२२ जुलाई। प्रातःकालीन कार्यक्रम में महिलाओं द्वारा तुलसी अष्टकम के संगान के पश्चात अ. भा. तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती कनक बरमेचा, मुख्य ट्रस्टी श्रीमती सुशीला पटावरी ने मंडल की जैन स्कॉलर परियोजना की किट भेंट की। परियोजना प्रभारी डॉ.मंजु नाहटा ने इस संदर्भ में अवगति दी।

मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी ने अपने वक्तव्य में कहा--'जिस समुदाय में ज्ञान की और उसमें भी विशेषकर तत्त्वज्ञान की पिपासा है, वह समुदाय तेजस्वी बनता है। उपासना एवं ज्ञानार्जन के द्वारा आत्मा की अनुभूति की जा सकती है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा--'जैनदर्शन में वर्णित पांच प्रकार के ज्ञान में मतिज्ञान व श्रुतज्ञान परोक्ष है तथा अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान व केवलज्ञान प्रत्यक्ष हैं। परोक्ष ज्ञान में इन्द्रियों की सहायता अपेक्षित होती है, जबकि प्रत्यक्ष ज्ञान आत्मा से उद्भूत होता है। उसमें किसी के सहयोग की जरूरत नहीं रहती। व्यक्ति अपनी साधना के प्रति सदैव सजग रहे, विकारों को अपने आसपास न आने दे तथा माया, मोह से दूर रहे तो प्रत्यक्ष ज्ञान का पथ स्वतः प्रशस्त हो सकता है।'

अतिशय कामना के परिणामों के संदर्भ में सबको सावधान करते हुए आचार्यवर ने कहा--'कामना की अतिशयता के परिणाम बड़े भयावह होते हैं। इससे पाप-कर्म का उपार्जन तो होता ही है, अपराध का ग्राफ भी ऊंचा होता चला जाता है और ईमानदारी क्रमशः लुप्त हो जाती है। इससे हिंसा का भाव वृद्धिंगत होता है। साधक आत्मालोचन करता हुआ अपने भीतर की कामना को नियंत्रित करने का प्रयत्न करे।'

जैन स्कॉलर परियोजना के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'महिला मंडल का यह एक नया उपक्रम है। इस श्रमसाध्य परियोजना में संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त करने हेतु विशेष श्रम अपेक्षित है। शिविर के बाद भी सतत अध्ययन जारी रखना है।' आचार्यवर के मंगलपाठ के साथ इस परियोजना का शुभारंभ हुआ। गुजरात से समागत प्रो. वी. वी. चौहान ने 'अपक्व भोजन प्रथा' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमारजी ने किया।

कल्याण का मार्ग

२३ जुलाई। आचार्यवर ने प्रातःकालीन मंगल प्रवचन में कहा--'प्राणियों में मस्तिष्क, शरीर, वाणी, प्रतिष्ठा, कुल, समृद्धि, ज्ञान, आयुष्य आदि की भिन्नताएं दृष्टिगोचर होती हैं। इस विभिन्नता के कारण के विषय में विभिन्न अवधारणाएं हैं। जैनदर्शन में कर्म को इसका मूल कारण माना गया है। जैनदर्शन का एक महत्त्वपूर्ण वाद है--कर्मवाद। कर्मों का आनुकूल्य, उपशमन और क्षय होने पर प्राणी अनुकूलता को प्राप्त करता है। इसके

विपरीत कर्मों की प्रतिकूलता की स्थिति में प्राणी को प्रतिकूलता प्राप्त होती है। हम साधना के द्वारा कर्मों के उपशमन और क्षय का प्रयास करें। पाप कर्मों के बंधन से मुक्त रहें तो कल्याण की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।' कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का भी वक्तव्य हुआ।

मिसाइलमैन कलाम शान्तिदूत की सन्निधि में

आज मध्याह्न में पूर्व राष्ट्रपति और मिसाइल मैन के नाम से विख्यात डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम शान्तिदूत आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में उपस्थित हुए। उन्होंने आते ही पूज्यप्रवर को करबद्ध नताशिर सादर वंदन किया और कुशलक्षेम पूछा। तत्पश्चात् उन्होंने साधु-साध्वियों का अभिवादन किया। बालमुनियों को देखकर अभिभूत डॉ. कलाम को आचार्यप्रवर ने बालमुनियों का परिचय कराया। आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष में अणुव्रत विश्व भारती द्वारा आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि और पूर्व राष्ट्रपति की विशेष उपस्थिति में मुख्य रूप से साधु-साध्वियों के लिए 'अध्यात्म और विज्ञान' विषय पर संगोष्ठी समायोजित हुई। करीब एक घंटे तक चली इस संगोष्ठी में पूज्यप्रवर और पूर्व राष्ट्रपति के विशेष संभाषण हुए। अणुविभा के अध्यक्ष श्री तेजकरण सुराणा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया तथा अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सोहनलाल गांधी ने संयोजन और भाषा-रूपान्तरण का दायित्व निभाया। आचार्यश्री महाश्रमण चतुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री महेन्द्र कोठारी, मंत्री श्री सुरेन्द्र कोठारी आदि पदाधिकारियों ने डॉ. कलाम का साहित्य और स्मृति चिन्ह से सम्मान किया।

प्रेम और अनुकम्पा के लिए प्रसिद्ध हैं महाश्रमण : डॉ. कलाम

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने अपने अभिभाषण में कहा--'मैं आज अपने आपको पवित्र एवं निर्मल साधु-साध्वियों के बीच पाकर हर्ष का अनुभव कर रहा हूं। आचार्य महाश्रमणजी को मेरा प्रणाम तथा सभी साधु-साध्वीगण को, जो इस गोष्ठी में भाग ले रहे हैं, मेरा अभिवादन। मित्रों! आज मैं ऐसे पवित्र एवं आध्यात्मिक लोगों के बीच में हूं। कल मैं उदयपुर गया और फिर वहां से राजसमन्द आते समय पूरे रास्ते में सोच रहा था कि जब मैं आचार्यश्री महाश्रमणजी और आप सभी साधु-साध्वियों से मिलूंगा, जो अध्यात्म के शिखर पर हैं, तो मैं क्या बात करूंगा?

मैं आचार्य महाश्रमणजी को एक बार पुनः प्रणाम करता हूं, जो अपने प्रेम और मानवमात्र के प्रति अनुकम्पा के लिए प्रसिद्ध हैं। उनकी दयालुता उनके प्रेरक प्रवचन और वक्तव्य में झलकती है। आचार्य महाप्रज्ञजी उनके साथ अभिन्नता की अनुभूति करते थे। वे कहा करते थे—'महाश्रमण की विनम्रता, सहिष्णुता और सहजता ने मेरे मन को आकृष्ट किया। इनमें श्रमशीलता, स्वार्थ का विसर्जन, कष्ट सहिष्णुता और परमार्थ की चेतना है।' निश्चय ही एक महान आत्मा द्वारा की गई यह एक महान प्रशस्ति है।

मित्रों, विज्ञान का विद्यार्थी, शिक्षक और प्रोफेसर की भूमिका में रहने के बाद मैं विज्ञान और अध्यात्म के बीच समन्वय महसूस कर सकता हूं। मैंने सोचा है कि मानवतावाद के महत्त्वपूर्ण स्तंभों को आचार्य महाश्रमणजी की उपस्थिति में जोड़ने की कोशिश करूं। इस संदर्भ में मुझे एक सूत्र मिला--परम्परागत विज्ञान और समकालीन विज्ञान चेतना के सेतु के द्वारा जुड़े हुए हैं। इसकी विस्तार से व्याख्या की जानी चाहिए।

विज्ञान पदार्थ के साथ कार्य करता है और समकालीन विज्ञान मस्तिष्क के साथ कार्य करता है। पदार्थ भौतिक पक्ष की अभिव्यक्ति है और मन चेतना की अभिव्यक्ति है। चेतना के बिना शरीर नाशवान है और शरीर के बिना चेतना दिखावटी आभूषण मात्र है। विज्ञान और समकालीन विज्ञान परस्पर पूरक हैं। विज्ञान भौतिकता को प्रतिबिम्बित करता है और समकालीन विज्ञान अध्यात्म को प्रतिबिम्बित करता है। अनुप्रेक्षा मस्तिष्क के उपद्रव का निरसन करती है और जब मस्तिष्कीय उपद्रव नष्ट हो जाता है, तब चिन्तन की एकता दृष्टिगोचर होती है। चिन्तन की एकता शांति और समृद्धि लाती है।

विज्ञान और समकालीन विज्ञान मूल आधार हैं। समकालीन विज्ञान आम व्यक्ति में स्व की अनुभूति कराने के लिए प्रविष्ट हो चुका है और उसे स्व की अनुभूति करा रहा है। स्व की अनुभूति स्वयं को समझने में सहायता

करती है और वह अद्वितीय सोच को उत्पन्न करने में भी सहायक बनती है। अद्वितीय सोच जिज्ञासु मन को जागृत करता है और जिज्ञासु मन दिमाग को प्रकाशित होने के लिए चुनौती देता है। जब मस्तिष्क प्रकाशित होता है तो ज्ञान-विवेक की जागरणा होती है। ज्ञान का विवेक मानसिक एकता की स्थापना करता है और मानसिक एकता समाज में शांति स्थापित करती है। समकालीन विज्ञान मन को सकारात्मकता के लिए उत्प्रेरित करता है, सकारात्मकता जिज्ञासु मन को प्रेरित करती है, जिज्ञासु मन विज्ञान को जन्म देता है और मानवता की उन्नति के लिए उसका उपयोग करता है।

अब मैं आप सभी से एक सुन्दर एवं विचारपूर्ण संदेश कि किस तरह एक व्यक्ति केवल देकर ही उपयोगी बन सकता है, बांटना चाहूंगा। मैं एक हजार वर्ष पूर्व महाकवि अवैय्यर द्वारा रचित तमिल कविता पढ़कर सुनाना चाहूंगा। इसका शीर्षक है--स्वर्ग के दरवाजे महान् आत्माओं के लिए खुले रहते हैं। मनुष्य के रूप में जन्म लेना दुर्लभ होता है। बिना किसी विकृति के जन्म लेना और भी दुर्लभ होता है। आप बिना विकृति के पैदा हो भी जाएं, किन्तु ज्ञान एवं शिक्षा प्राप्त करना दुर्लभतर होता है। व्यक्ति ज्ञान एवं शिक्षा भी प्राप्त कर ले, किन्तु मानव सेवा एवं आत्मा के उच्चतर स्वरूप के बारे में चिंतन की क्षमता प्राप्त करना और भी कठिन एवं दुर्लभ है। यदि व्यक्ति ऐसा निःस्वार्थ एवं पवित्र जीवन जीता है तो स्वर्ग के दरवाजे ऐसी महान् आत्मा का स्वागत करने के लिए स्वतः खुल जाते हैं। इस स्थान का आध्यात्मिक वातावरण वस्तुतः कवि अवैय्यर द्वारा व्यक्त भावनाओं के अनुकूल ही है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि आप सभी की जीवन-यात्रा भी इसी मार्ग की ओर प्रवृत्त हो रही है।

इस अवसर पर मुझे आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के एक प्रसिद्ध वक्तव्य का स्मरण हो रहा है, जो उनकी आठ दशक की तपस्या पर आधारित है। उन्होंने कहा था--'मेरी आत्मा मेरा ईश्वर है। त्याग मेरी प्रार्थना है। मैत्री मेरी भक्ति है। संयम मेरी शक्ति है। अहिंसा मेरा धर्म है।' अहिंसा मार्ग पर चलने वाले मेरे मित्रों! जिस अहिंसा का उपदेश जैन मुनियों एवं आचार्यों ने दिया, उसी की शक्ति से राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने सन् १९४७ में भारत को स्वतंत्र कराया। हमारे देश के लिए एक नये विजन (स्वप्न) की आवश्यकता है। मेरे चिंतन के अनुसार भारत के लिए अब दूसरे विजन (स्वप्न) की जरूरत है--एक ऐसे भारत का स्वप्न, जहां लोग स्वच्छ एवं हरे-भरे वातावरण में हों। जहां बिना गरीबी के लोग समृद्धि के साथ जीते हों। जहां लोग युद्ध के भय से मुक्त होकर शांति के साथ रहते हों। जहां लोग नैतिक आचरण करते हों। एक ऐसे देश का स्वप्न, जहां सभी नागरिक सुखी हों। अब प्रश्न उठता है कि हम ऐसे स्वप्न को कैसे साकार कर सकते हैं? इस दूसरे स्वप्न को साकार करने के लिए अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय की आवश्यकता है। विकास के लिए विज्ञान और तकनीकी का उपयोग कर हरे-भरे स्वच्छ वातावरण का निर्माण किया जा सकता है तथा हम आर्थिक समृद्धि प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही इस बात की भी आवश्यकता है कि हम नागरिकों को ऐसा वातावरण प्रदान करें जहां लोग युद्ध के भय से मुक्त हों, नैतिकता उनके जीवन का आधार हो। यह केवल देश की आध्यात्मिक शक्ति से ही संभव है। अध्यात्म एवं विज्ञान के समन्वय से ही लोग शांति, समृद्धि एवं सुख प्राप्त कर सकते हैं।

आज प्रातः मैंने बाल शांति निलयम देखा। निश्चय ही इस निलयम में सृजित वातावरण से बच्चों के मस्तिष्क एवं हृदय में एक ऐसा रुझान पैदा होगा, जिसकी परिणति जब वे बड़े होंगे, रूपान्तरित अच्छे इन्सान के रूप में होगी। मेरा परामर्श है कि अभिभावकगण अपने बच्चों के साथ इस बाल शांति निलयम को अवश्य देखें, ताकि बच्चों में न केवल मानवीय मूल्य प्रस्फुटित हो सके, बल्कि अभिभावकों को भी मार्गदर्शन मिल सके कि बच्चों को जागरूक नागरिक के रूप में परिवर्तित करने के लिए परिवार का वातावरण कैसे बदलें। राष्ट्रीय मूल्यों के उत्थान के संदर्भ में बाल शांति निलयम में कही गयी अपनी बात को दोहराना चाहूंगा चिरस्थाई समृद्धि और शांति के लिए राष्ट्र के सभी कार्यों में नैतिक मूल्यों का होना आवश्यक है। राष्ट्र में नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए समाज में नैतिक मूल्यों को स्थापित करना होगा। समाज में नैतिक मूल्यों को प्रतिष्ठापित करने के लिए परिवार में नैतिक मूल्यों की स्थापना आवश्यक है। परिवार में नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए अभिभावकों में नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठापना अपेक्षित है। महाविद्या, मूल्याधारित शिक्षा और स्वच्छ वातावरण के निर्माण

www.terapanthinfo.com

से अभिभावकों के हृदय में पवित्रता जन्म लेती है, जो उनमें नैतिक मूल्यवत्ता को स्थापित करती है।

मित्रो, जैसा कि मैंने कहा--हृदय की पवित्रता अभिभावकों में नैतिक मूल्यवत्ता को स्थापित करती है। आओ! हम हृदय के पवित्र आचरण की स्थिति में लिखे गये एक भजन को सामूहिक रूप से उच्चारित करें जिसकी ध्वनि प्रायः मुझे आध्यात्मिक केन्द्रों में गूंजती सुनाई देती है। जिस हृदय में पवित्रता है, वहीं चरित्र का सौन्दर्य निवास करता है। जहां चरित्र में सौंदर्य है, उसी घर में समरसता होती है। जब घर में समरसता होती है तो राष्ट्र में भी अनुशासन होता है। जब राष्ट्र में अनुशासन होता है तो दुनिया में शांति होती है। इसलिए मित्रों, चरित्र में सौंदर्य, परिवार में समरसता, राष्ट्र में मर्यादा और विश्व में शांति पवित्र हृदयों से ही प्राप्त होती है। पवित्र हृदय तीन प्रकार के व्यक्तियों द्वारा विकसित किये जा सकते हैं। वे कौन हैं? वे हैं--पिता, आध्यात्मिक वातावरण में रहने वाली माता तथा प्राथमिक विद्यालय में पढ़ाने वाला अध्यापक। ऐसा आध्यात्मिक वातावरण महाश्रमणजी के सान्निध्य में संचालित इस प्रकार की संस्थाओं से निर्मित होता है। आचार्यश्री के प्रति मेरा भाव भरा वंदन!

मैं इस अवसर पर तीन महान् धर्मों हिन्दू धर्म, जैन धर्म और इस्लाम धर्म तथा विज्ञान के अध्ययन से प्राप्त अनुभव आपके साथ बांटना चाहता हूं। भागवद्गीता में ३००० वर्ष पूर्व भगवान कृष्ण अर्जुन से कहते हैं 'ऐसा कभी भी कोई समय नहीं था, जब तुम, मैं और यहां एकत्रित राजा लोग विद्यमान नहीं रहे हों और न कोई ऐसा समय आयेगा जब वे विद्यमान नहीं रहेंगे। क्योंकि वही व्यक्ति बचपन, यौवन और वृद्धावस्था के माध्यम से शरीर में निवास करता है, इसीलिए मृत्यु के पश्चात वह दूसरा शरीर प्राप्त करता है। इन परिवर्तनों से बुद्धिमान व्यक्ति भ्रमित नहीं होते हैं।' मैं भगवान महावीर की वाणी से भी बहुत अनुप्रेरित हुआ हूं जो उन्होंने २५०० वर्ष पहले कही थी। उन्होंने कहा--एक व्यक्ति जलते हुए जंगल में एक वृक्ष पर बैठा हुआ चारों ओर जीवों को जलते हुए देख रहा है, किन्तु यह नहीं समझ पा रहा है कि कुछ ही क्षणों में यही दुर्भाग्य उसको भी घेरने वाला है। कुरान शरीफ का पाठ करते समय एक शूरा इस प्रकार आती है--'माताओं के चरणों में स्वर्ग विराजित है, पिता की खुशी में ही ईश्वर की खुशी है और पिता की नाराजगी में ही ईश्वर की नाराजगी है, इसलिए जो स्वर्ग में प्रवेश करना चाहता है उसे अपने माता-पिता को सदा खुश रखना चाहिए।' हाल ही में मैं एक वैज्ञानिक वक्तव्य पढ़ रहा था, जिसमें लिखा है--'क्वाण्टम फिजिक्स ने इस बात की पुष्टि कर दी है कि किसी वस्तु में प्रत्येक वस्तु की संभावना वस्तुतः विद्यमान रहती है।' मेरी दृष्टि में क्वाण्टम फिजिक्स में धर्म एवं विज्ञान के बीच एक अद्वितीय सेतु निहित है।

मित्रों ! मैंने जब आचार्यों, संतों द्वारा रचित गाथाओं एवं पवित्र पुस्तकों का और नवीनतम क्वाण्टम फिजिक्स का अध्ययन किया, मैंने शांति की प्रार्थना विकसित की जो इस तरह है--सर्वशक्तिमान प्रभु! मेरे देश के लोगों में ऐसे विचार एवं कार्यों का सृजन कर ताकि वे संगठित होकर रह सकें। हे प्रभु! मेरे लोगों को सदाचरण का आशीर्वाद दे, क्योंकि इसी से चरित्र को शक्ति प्राप्त होती है। मेरे देश के सभी धर्म-सम्प्रदायों के धार्मिक नेताओं को शक्ति प्रदान कर ताकि वे विभाजित करने वाली शक्तियों का मुकाबला कर सकें। हे प्रभु ! लोगों का मार्गदर्शन कर, ताकि वे दूसरे धर्म-सम्प्रदायों के विचारों का आदर कर सकें तथा व्यक्तियों, संस्थाओं एवं राष्ट्रों में व्याप्त शत्रुता, मित्रता एवं समरसता में परिवर्तित हो सके। हे प्रभु ! उनके मन में यह विचार स्थापित कर कि राष्ट्र व्यक्ति और संस्था से बड़ा होता है। हे प्रभु! मेरे लोगों को आशीर्वाद दे ताकि वे इस देश को अध्यवसाय द्वारा शांत एवं समृद्ध देश में रूपांतरित कर सकें। आचार्यजी के प्रति एक बार फिर श्रद्धा व्यक्त करता हूं तथा सभी संत-सतियों का अभिवादन करता हूं।

अध्यात्म और विज्ञान का समन्वय दुनिया के विकास में सहायक

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा--'मैं भगवान महावीर के चरणों में नमन करता हूं जो अध्यात्म जगत के महान व्यक्ति थे। आज हम अध्यात्म और विज्ञान पर एक संवाद कर रहे हैं। दुनिया को अध्यात्म और विज्ञान दोनों की आवश्यकता है। केवल अध्यात्म और केवल विज्ञान आत्म जगत के लिए अधूरे है। महान वैज्ञानिक आइंस्टीन ने भी कहा है--'धर्म विज्ञान के बिना अधूरा है और विज्ञान धर्म के बिना

www.terapanthinfo.com

पंगु है।' जहां तक मैं सोचता हूं अध्यात्म और विज्ञान एक दूसरे के पूरक हैं। जहां तक अध्यात्म और विज्ञान की समानता की बात है, मेरी दृष्टि के अनुसार 'सत्य की खोज' के क्षेत्र में दोनों समान हैं। अगर कोई अंतर है तो वह यह है कि अध्यात्म आत्मा की खोज का लक्ष्य रखता है और विज्ञान मुख्यतः भौतिक जगत की खोज का उद्देश्य रखता है। अध्यात्म एक और जगह विज्ञान से भिन्न है। अध्यात्म का लक्ष्य है मोक्ष, सभी प्रकार के दुखों से मुक्ति। वहीं दूसरी ओर विज्ञान का लक्ष्य पदार्थ की खोज करना है, मानव को अधिक से अधिक सुविधा उपलब्ध कराना है। अध्यात्म और विज्ञान में समानता है तो कहीं अध्यात्म और विज्ञान में भेद भी दिखाई देता है। लेकिन मैं यह कहना चाहूंगा कि अध्यात्म और विज्ञान दोनों का समन्वय दुनिया के विकास के लिए सहायक बन सकता है। इस समय मैं अपने गुरु परमपूज्य तुलसी और परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञ का पावन स्मरण करना चाहूंगा। वे कहते थे कि आध्यात्मिक वैज्ञानिक व्यक्तित्व समस्याओं का समाधान बन सकता है।'

शांतिदूत ने पूछा–कितनी बनी शांति की मिसाइल

शांतिदूत आचार्यप्रवर ने अपने वक्तव्य में मिसाइलमैन डॉ.कलाम को आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रदत्त कार्य की प्रगति के विषय में पूछते हुए कहा--'मैं पुनः नई दिल्ली १९९९ में हुई वार्ता को याद करना चाहूंगा, जब मेरे गुरु परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी ने डॉ. कलाम को शांति की मिसाइल बनाने की सलाह दी थी। मैं आपसे सुनना चाहता हूं कि उस दिशा में कितनी प्रगति हुई?' (आचार्यप्रवर के इस प्रश्न को सुनकर डॉ. कलाम और संगोष्ठी के सभी संभागी मुस्कुराने लगे।)

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. कलाम ने आचार्यवर के प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा--'आचार्य महाप्रज्ञ ने १९९९ में मुझे आदेश देते हुए कहा था कि तुम अणु-अस्त्रों से दूर क्यों नहीं हो जाते? अणु-अस्त्र के जिम्मेदार वैज्ञानिक होने की बजाय तुम आणविक अस्त्रों को अक्षम, निरर्थक और मूल्यहीन बनाने वाले जिम्मेदार वैज्ञानिक क्यों नहीं बन जाते? जब उन्होंने यह कहा था, तब यह एक बहुत बड़ा मिशन लगा था। मुझे यह बहुत चुनौतीपूर्ण मिशन लगा। पिछले कुछ वर्षों से मैं इस मिशन पर लगा हुआ हूं और मुझे लगता है कि हम समाधान के करीब हैं।

जैसा कि आप जानते हैं। अणु अस्त्रों का निर्माण पूरे विश्व में चल रहा है। सूचनाओं के अनुसार लगभग दस हजार अणु अस्त्र हैं और उनमें से नब्बे प्रतिशत अस्त्र अमेरिका और रूस के हाथों में हैं। उन दोनों देशों के राष्ट्रपति ने अस्त्रों को घटाने का निर्णय किया है।

अब मैं आपके सामने दो विचार रख रहा हूं। पहला विचार यह कि कुछ आर्थिक रूप से विकसित राष्ट्र हैं तो कुछ आर्थिक रूप से विकासशील राष्ट्र हैं। एक बात मैंने विद्यार्थियों को शोध करवाते समय कही कि विकसित राष्ट्र विकासशील राष्ट्रों के लिए कुछ नहीं कर रहे हैं। इसलिए हमें एक मॉडल तैयार करना होगा कि कैसे प्रत्येक राष्ट्र अपने संसाधनों द्वारा पड़ोसी राष्ट्रों की सहायता कर सकता है। यह मैंने प्रमाणित भी कर दिया और यह संभव भी है कि आर्थिक समृद्धि आ सकती है। अगर भारत आर्थिक रूप से समृद्ध है तो वह अपने पड़ोसी राष्ट्रों की आर्थिक समृद्धि के लिए कार्य कर सकता है। इसलिए मैं ये विचार रख रहा हूं कि द्वेष और कलह की स्थिति में भी शांति स्थापित की जा सकती है।

दूसरी बात--विज्ञान प्रौद्योगिकी में घटित होता है। आधुनिक विज्ञान एक विशाल तकनीक के साथ सामने आया है और वह है साइबर तकनीक। आप जानते हैं कि साइबर अस्त्र को प्रकाश की गति से संचालित कर सकते हैं, किन्तु आप किसी भी मिसाइल को प्रकाश की गति से संचालित नहीं कर सकते। साइबर युद्ध, इलेक्ट्रानिक युद्ध प्रकाश की गति से संचालित किया जा सकता है। आणविक युद्ध का साइबर युद्ध में परिवर्तन होना बहुत निकट है।

तो ये तीन बातें है। पहला--आणविक अस्त्रों का घटना। यह एक तिहाई भाग तक होना चाहिए फिर और आगे, और आगे ताकि सारे आणविक अस्त्र समाप्त हो जाएं। दूसरी बात--विकसित और विकासशील राष्ट्रों के द्वारा दूसरे देशों की आर्थिक समृद्धि के लिए सहायता करना। तीसरी बात--प्रौद्योगिकी स्वयं अस्त्रों को विकसित कर आणविक अस्त्रों को महत्त्वहीन कर देगी। आणविक अस्त्रों को महत्त्वहीन बनाने के ये तीन

www.terapanthinfo.com

कदम हैं।' संगोष्ठी के पश्चात पूर्व राष्ट्रपति आचार्यवर से आशीर्वाद प्राप्त कर प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री महेन्द्र कोठारी के आवास पर भोजन करने के उपरान्त जयपुर की ओर प्रस्थित हो गए।

'ग्रेट क्रियेशन' में डॉ कलाम

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम केलवा में पूज्यप्रवर की सन्निधि में आने से पूर्व राजसमंद स्थित अणुव्रत विश्व भारती में गए। ढ़ाई घंटे अपने इस प्रवास में डॉ. कलाम ने अणुविभा परिसर में अवस्थित विश्वदर्शन दीर्घा, पुस्तकालय, विज्ञान कक्ष, संग्रहालय, गुड़ियाघर, महापुरुष जीवन दर्शन, बाल संसद आदि विभिन्न दीर्घाओं का गहराई से अवलोकन किया और वहां संचालित गतिविधियों की अवगति ली। उन्होंने बालशांति निलयम में समायोजित द्विदिवसीय शिविर में संभागी पन्द्रह विद्यालयों के १३५ बच्चों द्वारा किए जा रहे जीवन विज्ञान के विभिन्न प्रयोगों का अवलोकन करते हुए बच्चों से संवाद स्थापित किया और उनकी जिज्ञासाओं को भी समाहित किया। डॉ. कलाम ने 'महाप्रज्ञ अहिंसा दर्शन' के अवलोकन के दौरान अपने साथ समागत युवक से पूछा 'अहिंसा के पुजारी कौन-कौन हैं?' वह युवक भगवान महावीर और महात्मा बुद्ध का नाम लेकर रुक गया तो डॉक्टर कलाम ने उससे कहा 'मैं तुम्हें सौ में से पचास नम्बर ही दूंगा। अहिंसा के तीन पुजारी हैं महावीर, महात्मा गांधी और महाप्रज्ञ। अब तुम इसे हमेशा याद रखना।' पूर्व राष्ट्रपति ने अणुविभा में समायोजित 'वर्तमान शिक्षा पद्धति बनाम नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्य' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी को भी संबोधित किया। उन्होंने अणुविभा की 'स्कूल विद ए डिफरेन्स' प्रायोजना पर हस्ताक्षर करते हुए उसके शुभारंभ की विधिवत घोषणा की। उल्लेखनीय है--विद्यार्थियों में शान्ति व अहिंसा की संस्कृति विकसित करने के उद्देश्य से यह प्रायोजना राजसमन्द के चालीस विद्यालयों में प्रारंभ की जा रही है। डॉ.कलाम ने अणुविभा की बालोदय दीर्घाओं के अवलोकन के पश्चात सम्मति पुस्तिका में लिखा--'ग्रेट क्रियेशन' वे बालोदय के संस्थापक मोहनभाई जैन से मिलकर अभिभूत हो गए। पूर्व राष्ट्रपति के राजसमन्द व केलवा समागमन और कार्यक्रम की संयोजना में अणुविभा के अध्यक्ष श्री तेजकरण सुराणा, मंत्री श्री संचय जैन और अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. सोहनलाल गांधी का निष्ठापूर्ण श्रम रहा।

मुक्ति का मार्ग भावशुद्धि

२४ जुलाई। आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'कर्मबंध और उसके क्षय में भावना की मुख्य भूमिका रहती है। भावशुद्धि में स्थित अप्रमत्त व्यक्ति द्वारा द्रव्य हिंसा होने पर भी पापकर्म का बंध नहीं होता और प्रमत्त साधु द्वारा द्रव्यहिंसा न होने पर भी पापकर्म का बंध हो जाता है। भाव ही इसका मुख्य कारण बनता है। किसी भी प्रवृत्ति के पीछे प्रयोजन महत्त्वपूर्ण तथ्य होता है। बिल्ली अपने बच्चे और चूहे दोनों को अपने मुंह में लेती है। इसी प्रकार डाकू और डॉक्टर दोनों पेट को चीरते हैं। किन्तु दोनों में प्रयोजन बहुत भिन्न होता है। प्रवृत्ति का प्रयोजन एवं भावना ही कर्मबंध का मुख्य हेतु होती है। अतः साधक किसी भी आलम्बन के द्वारा निरंतर भावशुद्धि में रहने का अभ्यास करे। बाह्य पदार्थों के प्रति आकर्षण भावशुद्धि को कमजोर बनाता है। अतः साधक अनासक्ति की साधना करता हुआ भावशुद्धि के द्वारा पापकर्मों के बंधन से मुक्त रहने का प्रयास करे।' कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का अभिभाषण हुआ। अपनी नवगठित कार्यकारिणी के साथ उपस्थित जयपुर तेयुप के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र सेठिया, मंत्री श्री हितेश मांडिया एवं अ.भा.तेयुप के संगठन मंत्री श्री अविनाश नाहर ने नशामुक्ति के ३५० फार्म श्रीचरणों में समर्पित किए। कार्यक्रम से पूर्व जयपुर से समागत नब्बे युवक नशामुक्ति रैली के रूप में पूज्यवर के प्रवास स्थल पर पहुंचे।

नश्वर शरीर से अमर आत्मा का कल्याण

२५ जुलाई। प्रातःकालीन कार्यक्रम में पूज्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'शरीर और चेतना दोनों के योग को जीवन कहा जाता है। किन्तु दोनों के स्वरूप में बहुत अन्तर होता है। चेतना को शाश्वत कहा गया है, जबकि शरीर अनित्य होता है। इस नश्वर शरीर से ऐसी साधना करें कि आत्मा से स्पृष्ट कर्म

क्षीणता को प्राप्त हो सके। ज्यों-ज्यों कर्म क्षीण होते हैं, त्यों-त्यों आत्मा की निर्मलता वृद्धिंगत होती है। आत्मनैर्मल्य के विकास से आभामंडल भी तेजस्वी बनता है। कर्मों के प्रबल होने पर चेतना की पवित्रता न्यूनता को प्राप्त होती है और आत्मनैर्मल्य विकसित होने पर कर्म कमजोर बनते हैं। इन दोनों के संघर्ष का नाम ही साधना है। साधक कर्मों को क्षीण कर आत्मनैर्मल्य के द्वारा विजयी बनने का प्रयत्न करे।' कार्यक्रम में मंत्री मुनि का भी प्रेरक वक्तव्य हुआ। जलगांव से समागत श्री नवरतनमलजी चोरड़िया ने 'भक्ति के स्वर' नामक संकलन पूज्य चरणों में उपहृत किया।

गत अनेक दिनों से केलवा में मानसून अपना रंग जमकर दिखा रहा है। दिन और रात्रि में कभी तेज तो कभी हल्की बूंदाबांदी हो जाने से मौसम सुहावना बना हुआ है।

२६ जुलाई। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने प्रातःकालीन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--प्राणी जैसा कर्म करता है, उसे वैसा ही फल भोगना पड़ता है। उसके अच्छे आचरणों से निर्जरा के साथ पुण्य कर्म का भी बंध होता है, जो उसे वैभव, सत्ता, प्रतिष्ठा आदि प्रदान करते हैं और उसके दुराचरणों से पापकर्मों का बंध होता है, जो उसे अशुभ फल प्रदान करते है। हालांकि साधना के क्षेत्र में पुण्य को भी त्याज्य माना गया है, क्योंकि वह भी बंधन है। साधक की तपस्या-साधना का एकमात्र लक्ष्य निर्जरा हो। भौतिक कामना से तपस्या का आध्यात्मिक फल नहीं मिल सकता। निर्जरा के साथ अनायास पुण्य का बंध हो जाता है। किन्तु व्यक्ति पुण्य का उदय होने पर अहंकार न करे, अन्यथा वह पापकर्मों का बंध कराने वाला बन जाता है। साधक कर्मों की अनुकुलता की स्थिति में भी सम रहता हुआ अपने सदाचार का सेवन करता रहे तो आत्मा उन्नति की ओर अग्रसर होगी।

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का भी प्रेरक वक्तव्य हुआ। नवगठित केलवा अणुव्रत समिति के अध्यक्ष मुकेश कोठारी ने अपनी कार्यकारिणी के साथ शपथ स्वीकार की। अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलालजी और महेन्द्र कर्णावट ने इस संदर्भ में अपने विचारों को अभिव्यक्ति दी। भीलवाड़ा तेरापंथ महिला मंडल की नवनिर्वाचित अध्यक्ष कीर्ति बोरदिया ने भीलवाड़ा से समागत १५० महिलाओं की ओर से समर्पण भावनाएं प्रस्तुत की।

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अणुव्रत समिति केलवा के विषय में कहा--अणुव्रत समिति, केलवा गठित हो गई है। इस चतुर्मास के एक लक्ष्य की घोषणा करते हुए मैंने प्रवेश के दिन कहा था-'नशामुक्त केलवा'। नवगठित समिति उस कार्य को आगे बढ़ाती रहे, हर जाति और वर्ग के लोगों को नशामुक्त बनने हेतु उत्प्रेरित करे। जितना संभव हो 'नशामुक्त केलवा' इस लक्ष्य की दिशा में आगे बढ़ती रहे, खूब अच्छा काम करे, शुभाशंसा।

तेरापंथ प्रबोध पर व्याख्यान

तेरापंथ के एकादशमाधिशास्ता आचार्य महाश्रमण द्वारा १७ जुलाई को तेरापंथ की जन्मभूमि केलवा के तेरापंथ समवसरण में **'तेरापंथ प्रबोध'** का व्याख्यान प्रारंभ किया गया। महाप्राण गुरुदेव तुलसी द्वारा विरचित इस सुन्दर रचना का पूज्यवर के मुखारबिन्द से मधुर संगान के साथ श्रवण श्रोताओं के लिए आह्लादकारी बन रहा है। प्रतिदिन होने वाले आगमाधारित प्रवचन के पश्चात जब आचार्यप्रवर राजस्थानी भाषा में इस आख्यान की व्याख्या करते हुए आचार्य भिक्षु और तेरापंथ से संबद्ध रोचक घटना प्रसंगों को सुनाते हैं तो उपस्थित जनता मंत्रमुग्ध होकर तन्मयता से सुनती है। पूज्यवर के ओजपूर्ण संगान और व्याख्यान को सुनकर श्रद्धालुओं के मानस पटल पर गणाधिपति गुरुदेव तुलसी का चित्र अनायास उभर आता है और वे महाश्रमण में तुलसी का दर्शन कर धन्यता की अनुभूति करते हैं।

स्मृति-संबल

- लोणार-मुम्बई निवासी श्री बींजराज जोगड़ का स्वर्गवास हो गया। उन्होंने सादगीपूर्ण जीवन जीया। अणुव्रत उनके जीवन में दृष्टिगोचर होता था। पेशे से वकील जोगड़जी की सभी समाजों में अच्छी प्रतिष्ठा थी। इनकी दो बहनें साध्वी उज्ज्वलप्रभाजी और साध्वी अनुप्रेक्षाश्रीजी धर्मसंघ में दीक्षित हैं। मुनि आलोककुमारजी उनके संसारपक्षीय भाई, मुनि देवार्यकुमारजी भाणजे एवं साध्वी सन्मतिप्रभाजी भाणजी हैं। उनकी धर्मपत्नी

एस.एन. डी.टी.युनिवर्सिटी में कुलपति और मुम्बई अणुव्रत समिति की सक्रिय कार्यकर्त्री हैं।

- मोमासर निवासी एवं गुलाबबाग-कोलकाता प्रवासी श्रीमती श्रीदेवी संचेती का अचानक ब्रेन हेमरेज होने से स्वर्गवास हो गया। त्याग-प्रत्याख्यान में उनकी रुचि थी। उधर पधारने वाले साधु-साध्वियों की बड़े मनोयोग से सेवा करती थीं। मुनि धर्मरुचिजी, साध्वी निर्वाणश्रीजी एवं साध्वी कीर्तियशाजी उनके संसारपक्षीय न्यातीले हैं। उन्होंने धार्मिक जीवन जीया और अपने परिवार को भी धर्म के संस्कार दिए।
- अड़सीपुरा निवासी, उधना-सूरत प्रवासी श्रीमती लादीबाई आंचलिया (धर्मपत्नी-स्व.चुन्नीलालजी आंचलिया) का ९१ वर्ष की अवस्था में देहान्त हो गया। वे स्वर्गीय मुनि शोभालालजी की संसारपक्षीया बहन थीं। प्रतिदन पांच सामायिक, धार्मिक तिथियों पर हरियाली का त्याग, वर्षों से चौविहार एवं संवत्सरी पर अष्टप्रहरी पौषध का उनके नियम था। गांव में वे मोटीबाई के नाम से विख्यात थीं। उनके भरे-पुरे परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं। सुपुत्र संपत आंचलिया अ.भा.तेयुप के साथ वर्षों तक जुड़े रहे और 'श्रेष्ठ कार्यकर्ता' के रूप में सम्मानित हुए।
- अमृतसर निवासी श्रीमती अमरादेवी कोचर (धर्मपत्नी-श्री सुन्दरलालजी कोचर) का स्वर्गवास हो गया। वे वर्षों तक महिला मंडल की अध्यक्ष रहीं। सामाजिक कार्यों में वे सक्रिय थीं और सबको साथ लेकर चलने की उनमें क्षमता थी। आचार्य तुलसी की पंजाब यात्रा के समय उन्होंने पूरे मनोयोग से सेवा की। अनेक बार उन्होंने अठाई व पन्द्रह की तपस्या की। उनके पुत्र-पुत्रियों में धर्म के अच्छे संस्कार हैं। सुपुत्र संजीव कोचर डी.ए. बी.कालेज के प्रिंसिपल हैं। अमृतसर में उनका व्यापक संपर्क है और समाज के अग्रणी कार्यकर्ता हैं।
- बीदासर निवासी, कोलकाता प्रवासी श्रीमती मूलीदेवी बैद (धर्मपत्नी-स्व. बगसीरामजी बैद) का स्वर्गवास हो गया। वे साध्वी पुण्ययशाजी की संसारपक्षीया नानीजी थीं। धार्मिक विचारों वाली श्राविका मूलीदेवी नियमित रुप से सामायिक करती थीं। उन्होंने आठ तक की लड़ी एवं पन्द्रह की तपस्या की। पूरे परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।
- असाढ़ा निवासी श्रीमती खम्मादेवी भंसाली (धर्मपत्नी-स्व.चम्पालालजी भंसाली) का बयासी वर्ष की अवस्था में लगभग पांच घंटे के सागारी संथारे में स्वर्गवास हो गया। आचार्यश्री तुलसी से 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त खम्मादेवी ने साधु-साध्वियों और केन्द्र की खूब सेवा की। वह तपस्विनी श्राविका थी। अपने जीवन में उन्होंने २८ वर्षीतप, एक से छत्तीस तक की लड़ी, १६ मासखमण, दो पंचरंगी, आयंबिल मासखमण, कंठीतप, कर्मचूर, धर्मचक्र, लघुचूर, भद्रतप, चौबीस तीर्थंकरों की लड़ी सहित अनेक तपस्याएं की। रात्रिभोजन, सचित्त व जमीकन्द का वर्षों से परित्याग था। उनके सुपुत्र पारसमलजी व जवाहरलालजी इचलकरंजी के जिम्मेदार श्रावक हैं। पूरे परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।
- बालोतरा निवासी श्रीमती सुआदेवी ढेलड़िया (धर्मपत्नी-स्व. केसरीमलजी थोबवाला) का ९८ वर्ष की अवस्था में स्वर्गवास हो गया। प्रारंभ के वर्षों में मारवाड़ आने-जाने वाले साधु-साध्वियों के रास्ते की सेवा वे बड़े मनोयोग से करती थीं। इस कारण उन्हें शैयातर होने का लाभ और उस क्षेत्र को चारित्रात्माओं का लम्बा प्रवास मिलता। प्रकृति से भद्र सुआदेवी ने परिवार को धर्म के अच्छे संस्कार दिए। परिवार के सदस्यों ने विभिन्न पदों पर रहकर समाज और संघ को अपनी सेवाएं दीं। पूरे परिवार में संघ और संघपति के प्रति गहरी निष्ठा के भाव हैं।
- रायपुरिया निवासी श्रीमती सज्जनदेवी श्रीमाल(धर्मपत्नी-श्री कालूरामजी श्रीमाल) का स्वर्गवास हो गया। उन्होंने १०७ वर्ष का लम्बा आयुष्य पाया। वह सरल स्वभावी और आस्थाशील श्राविका थीं। रात्रि भोजन और जमीकन्द का परिहार तथा नियमित दो सामायिक उनकी दिनचर्या के अंग थे। श्रीमती सज्जनदेवी के निधन के पांच दिन बाद उनके सुपुत्र श्री समरथमल का ८५ वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। उन्होंने भी त्याग-प्रत्याख्यानयुक्त धार्मिक जीवन जीया।
- बोरावड़ निवासी श्री जयचन्दलालजी सुराणा का स्वर्गवास हो गया। श्री सुराणाजी के मन में धर्म के प्रति निष्ठा और धर्मसंघ की सेवा की भावना थी।
- चारभुजा निवासी मुम्बई प्रवासी श्री भीमराज सिंघवी का यात्रा के दौरान मुम्बई और बड़ोदरा के बीच स्वर्गवास

www.terapanthinfo.com

हो गया। पिछले बीस वर्षों से वे प्रायः प्रतिदिन सामायिक और जप किया करते थे। साधु-साध्वियों की मार्गवर्ती सेवा भी उन्होंने अनेक बार की।

- कराड़ी निवासी शिमोगा प्रवासी श्री चंपालाल बरपेटा, टाडगढ़ निवासी श्रीमती कंकुदेवी मांडोत, श्रीमती गुलाबदेवी सामरा (चिताम्बा) का पिछले दिनों स्वर्गवास हो गया। पारिवारिकजनो ने पूज्यवर से आध्यात्मिक संबल प्राप्त किया। सभी दिवंगत आत्माओं के भावी आध्यात्मिक विकास की मंगलकामना।

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव पर कैंसर जांच शिविर

२४ जुलाई को केलवा में आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा निःशुल्क केंसर जांच शिविर की समायोजना की गई। एक्शन कैंसर हॉस्पिटल दिल्ली के सहयोग एवं मदनलाल संदीपकुमार लोढ़ा आमेट, मुम्बई के सौजन्य से समायोजित इस शिविर में १७० व्यक्तियों की जांच की गई। डॉ राजेश जैन के नेतृत्व में दिल्ली से समागत छह चिकित्सकों सहित पन्द्रह सदस्यीय टीम ने इस शिविर में अपनी सेवाएं दीं। शिविर की सफल समायोजना में फोरम की राजसमन्द शाखा का निष्ठापूर्ण योग रहा।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में डॉ. राजेश जैन, शिविर संयोजक मयंक कोठारी और श्री संदीप लोढ़ा ने अपने विचार व्यक्त किए। प्रवचन के पश्चात पूज्यप्रवर ने शिविर का अवलोकन किया। मध्याह्न में आयोजित समापन कार्यक्रम में आचार्यप्रवर ने कार्यकर्ताओं को पावन संबोध प्रदान किया। मुनि रजनीशकुमारजी ने अपने विचारों को अभिव्यक्ति दी। उल्लेखनीय है--आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव वर्ष में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा पचास चिकित्सा शिविरों के आयोजन का संकल्प व्यक्त किया गया है।

पर्युषण पर्व : नवाह्निक कार्यक्रम

१. खाद्य संयम दिवस	२६ अगस्त	६. जप दिवस	३१ अगस्त
२. स्वाध्याय दिवस	२७ अगस्त	७. ध्यान दिवस	१ सितम्बर
३. सामायिक दिवस	२८ अगस्त	८. संवत्सरी महापर्व	२ सितम्बर
४. वाणी संयम दिवस	२९ अगस्त	९ क्षमापना दिवस	३ सितम्बर
५. अणुव्रत चेतना दिवस	३० अगस्त		

पर्युषण आराधना

१. प्रतिदिन तीन सामायिक
२. प्रतिदिन दो घंटा मौन
३. प्रतिदिन एक घंटा स्वाध्याय
४. प्रतिदिन नौ द्रव्यों से अधिक खाने का त्याग
५. सचित्त और जमीकन्द खाने का त्याग
६. ब्रह्मचर्य का पालन
७. जप व ध्यान आधा घंटा
८. रात्रि भोजन का परिहार
९. सिनेमा, फिल्म आदि का परिहार